Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.07, July,2025

डिजिटल युग में शिक्षण विधियों का प्रभाव

*आंशिक शुक्ला
शोध छात्रा (शिक्षाशास्त्र)
महात्मा ज्योतिबा फूले रोहिलखंड विश्वविद्यालय बरेली

****

शोधसार: *डिजिटल शिक्षा सीखने की एक तकनीक या पद्धति है जिसमें तकनीक और डिजिटल उपकरण शामिल होते हैं। यह एक नया और व्यापक तकनीकी क्षेत्र है जो देश के किसी भी कोने से किसी भी छात्र को ज्ञान और जानकारी प्राप्त करने में मदद करेगा। ऐसा माना जाता है कि भारत में डिजिटल शिक्षा शिक्षा और सीखने का भविष्य है। भारत सरकार ने देश के विभिन्न कोनों में शिक्षा प्रदान करने के स्रोतों और साधनों की व्यापक पहुँच के लिए विभिन्न माध्यमों को परिभाषित किया है। इस लेख में आगे भारत में डिजिटल शिक्षा के लिए सरकार द्वारा अपनाए गए माध्यमों और पहलों पर चर्चा की गई है।*

21वीं शताब्दी को डिजिटल क्रांति का युग कहा जाता है। यह युग इंटरनेट, स्मार्टफोन, ई-लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तथा डिजिटल उपकरणों की तीव्र प्रगति से परिपूर्ण है। शिक्षा क्षेत्र भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा है। पारंपरिक शिक्षण विधियाँ अब डिजिटल माध्यमों के साथ मिलकर नई-नई संभावनाओं को जन्म दे रही हैं। इस शोधपत्र में डिजिटल युग में शिक्षण विधियों के बदलाव, उनके प्रभाव, लाभ, चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है।

शब्दबिन्दु:- *डिजिटल क्रांति, कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, ई-लर्निंग, संप्रेषण ऑडियो विजुअल स्मार्ट क्लास, ए आई, मूल्यांकन, शिक्षण विधियां आदि।*

****

डिजिटल युग की परिभाषा

डिजिटल युग वह समय है जिसमें सूचना, संवाद और ज्ञान का संप्रेषण मुख्यतः डिजिटल तकनीक के माध्यम से होता है। कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म आदि इसके प्रमुख उपकरण हैं।

डिजिटल शिक्षा की विशेषताएँ

- इसमें त्वरित जानकारी की उपलब्धता होती है
- शिक्षण में ऑडियो-विजुअल की सहायता से शिक्षण कार्य को सुगम बनाया जा सकता हैं।
- शिक्षा का वैयक्तिकरण
- ऑनलाइन इंटरैक्टिव लर्निंग के द्वारा दुर्लभ सम्रागी भी असानी से प्राप्त हो जाती है।
- शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच डिजिटल संवाद के द्वारा शिक्षार्थी की समझ बढती हैं।

पारंपरिक बनाम डिजिटल शिक्षण विधियाँ

- पहलू पारंपरिक विधियाँ डिजिटल विधियाँ
- संप्रेषण का माध्यम कक्षा, ब्लैकबोर्ड, पुस्तकें ई-कंटेंट, वीडियो, LMS
- शिक्षक की भूमिका ज्ञान का प्रदाता मार्गदर्शक व सहायक
- शिक्षार्थी की भूमिका श्रोता व अनुसरणकर्ता सक्रिय भागीदार
- मूल्यांकन प्रणाली लिखित परीक्षा ऑनलाइन टेस्ट, क्विज़

डिजिटल शिक्षण विधियों के प्रकार

- ई-लर्निंग- इसके माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण जैसे डव्ब्, ैॅाल्ाड, कोर्स को अध्ययन किया जाता हैं इसमें शिक्षार्थी और शिक्षक का वार्तालाव ई-माध्यम से होता हैं।
- ब्लेंडेड लर्निंग- इसके माध्यम से ऑफलाइन और ऑनलाइन शिक्षण का संयोजन किया जाता हैं।
- स्मार्ट क्लास- इसमें प्रोजेक्टर, टच स्क्रीन, डिजिटल बोर्ड, इंटरनेट युक्त कक्षाएँ होती हैं जिनकी सहायता से शिक्षण कार्य सुगम एवं रूचिपूर्ण हो जाता हैं।
- मोबाइल लर्निंग- इसमें एप्स, व्हाट्सएप, यूट्यूब आदि के माध्यम से शिक्षण कार्य किया जाता हैं इसका मुख्य उददेश्य दूरदराज के छात्र-छात्राओं को अध्ययन सामग्री देना हैं।
- वर्चुअल रियलिटी और एआई आधारित शिक्षण- यह सबसे आधुनिक शिक्षण विधि हैं। जिसके द्वारा प्रयोगशालाओं और कठिन अवधारणाओं को आभासी रूप में समझाया जाता हैं।

डिजिटल युग में शिक्षण विधियों का प्रभाव- इन विधियों का प्रभाव निम्नलिखित हैं

(A) सकारात्मक प्रभाव

- शिक्षा की पहुँच में वृद्धि- दूरदराज क्षेत्रों में रहन वाले मध्यम वर्ग के छात्र-छात्राओं तक शिक्षा कम पैसों में पहुँच जाती हैं।
- व्यक्तिगत शिक्षण- छात्रों की रुचियों के अनुसार सीखने का अवसर प्राप्त होता हैं जिससे वे अपने मनपसंद विषय में अपना केरियर बना सकते हैं।
- इंटरएक्टिव लर्निंग- एनिमेशन, ग्राफिक्स, वीडियो से विषय रुचिकर बनता है जिससे सीखने में मदद मिलती हैं।
- सीखने की गति का नियंत्रण- छात्र अपनी गति से सीख सकते हैं।
- मूल्यांकन प्रणाली में विविधता- ऑनलाइन क्विज, तत्काल फीडबैक के द्वारा परीक्षा परिणाम तुरन्त ही प्राप्त हो जाता है जिससे पारदार्शिता बनी रहती हैं और बच्चे के भविष्य के साथ खिलबाड़ नही होता।

(B) नकारात्मक प्रभाव

- डिजिटल डिवाइड- ग्रामीण क्षेत्र व निर्धन छात्रों के पास संसाधनों की कमी होती है जिससे उनको समय से सामग्री प्राप्त नही हो पाती।
- स्क्रीन टाइम का बढ़ना- इन विधियों द्वारा आंखों, एकाग्रता व स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है जिससे शरीर की कोशिकायें नरवस हो जाती हैं।
- शिक्षकों का प्रशिक्षण- भारत में आज भी सबसे अधिक जनसंख्या गांव में निवास करती है जहां डिजिटल उपकरणों का सही उपयोग नही हो पाता और इंटरनेट आदि की समस्यायें शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बाधा उत्पन्न करते हैं।
- व्यक्तिगत स्पर्श की कमी- चूकिं छात्र-शिक्षक संबंधों में दूरी होती हैं जिससे वे अच्छे प्रकार से सीख नही पाते।

डिजिटल शिक्षा का विस्तार

कोविड-19 महामारी ने अचानक दुनिया भर की शिक्षा प्रणाली को ऑनलाइन माध्यम पर निर्भर बना दिया। इसने डिजिटल शिक्षण विधियों को मजबूती से स्थापित किया। भारत में Diksha और Swayam जैसे पोर्टल्स का उपयोग बढ़ा एवं शिक्षकों और छात्रों ने जूम गूगलमीट माइक्रोशा ॅफ्ट आ ॅफिस जैसे ऐप्स का उपयोग सीखा। छात्रों ने घर बैठे शिक्षा प्राप्त की, लेकिन यह सभी के लिए समान रूप से प्रभावी नहीं रहा क्योंकि आज भी ग्रामीण क्षेत्र में इंटरनेट एवं बिजली का अभाव हैं।

डिजिटल शिक्षा से शिक्षक की भूमिका में बदलाव

डिजिटल युग में शिक्षक केवल जानकारी देने वाला नहीं रहा, बल्कि एक फैसिलिटेटर, टेक्निकल गाइड और मेंटोर बन गया है। उन्हें अब तकनीकी दक्षता, सॉफ्ट स्किल्स, और इंटरएक्टिव टूल्स की जानकारी आवश्यक हो गई है।

डिजिटल शिक्षा का छात्रों पर प्रभाव

आज की तेज़ी से बदलती दुनिया में, जहाँ तकनीकी प्रगति हमारे जीवन के हर पहलू को नया रूप दे रही है, शिक्षा में भी गहरा बदलाव आया है। पारंपरिक चॉक-एंड-बोर्ड पद्धति धीरे-धीरे डिजिटल शिक्षा प्रणाली का स्थान ले रही है, जो एक ऐसी क्रांति है जो भारत और दुनिया भर में शिक्षा के परिदृश्य को नया रूप दे रही है। यह ब्लॉग डिजिटल शिक्षा प्रणाली की पड़ताल करता है और भारत के संदर्भ में छात्रों के लिए इसके असंख्य लाभों पर गहराई से प्रकाश डालता है।

- इससे छात्रों की रुचि और आत्मनिर्भरता में वृद्धि होती है जिससे वे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

- इंटरनेट रिसर्च स्किल्स का विकास छात्र-छात्राओं को नई नई चीजें और जानकारी देता हैं।
- छात्र-छात्राओं को समूह कार्य और डिजिटल संवाद के द्वारा नई नई जानकारियां प्राप्त होती रहती है उनके अन्दर प्रतियोगिता बढती हैं।
- इसका सबसे अधिक प्रभाव छात्र-छात्राओं के मन पर पड़ता है उनकी मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ जैसे एकाकीपन, ध्यान में कमी आ जाती हैं।

डिजिटल शिक्षण में नवीनतम प्रयोग

डिजिटल शिक्षा कार्य योजना (2021-2027) एक नवीनीकृत यूरोपीय संघ (ईयू) नीति पहल है जो यूरोप में उच्च गुणवत्ता वाली, समावेशी और सुलभ डिजिटल शिक्षा का एक सामान्य दृष्टिकोण निर्धारित करती है, और इसका उद्देश्य सदस्य राज्यों की शिक्षा और प्रशिक्षण प्रणालियों को डिजिटल युग के अनुकूल बनाने में सहायता करना है।

30 सितंबर 2020 को अपनाई गई कार्य योजना, COVID-19 महामारी की चुनौतियों और अवसरों का समाधान करने के लिए डिजिटल शिक्षा पर यूरोपीय स्तर पर अधिक सहयोग का आह्वान है, और राष्ट्रीय, यूरोपीय संघ और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा और प्रशिक्षण समुदाय (शिक्षक, छात्र), नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं के लिए अवसर प्रस्तुत करती है।

सुझाव

1. डिजिटल उपकरणों की सुलभता और समान अवसर सुनिश्चित किए जाएँ जिससे शिक्षार्थी आसानी से सीख सकें।

2. शिक्षकों का नियमित प्रशिक्षण कराया जाए जिससे वे समय अनुसार नई नई शिक्षण विधियों का प्रयोग करके अपने विद्याथियों को अपडेट कर सकें।

3. शिक्षण में संवेदनशीलता और मानवीय मूल्य शामिल किए जाएँ जिससे वे एक दूसरे भावनाओं का आदर कर सकें।

4. बच्चों की मानसिक और शारीरिक भलाई पर ध्यान दिया जाए जिसके लिए उन्हें नई नई शिक्षा पद्वति के द्वारा नई नई जानकारी मिले।

5. ऑनलाइन और ऑफलाइन का संतुलन रखा जाए जिससे समाज के सभी छात्र-छात्राओं को समान जानकारी मिल सकें।

निष्कर्ष (Conclusion)

डिजिटल युग ने शिक्षण विधियों को एक नई दिशा दी है। यह छात्रों को न केवल जानकारी प्राप्त करने का अवसर देता है, बल्कि उन्हें वैश्विक नागरिक बनने की ओर प्रेरित करता है। हालांकि, यह आवश्यक है कि डिजिटल माध्यम का उपयोग सोच-समझकर, संवेदनशीलता के साथ और समावेशी दृष्टिकोण से किया जाए। पारंपरिक और डिजिटल दोनों शिक्षण विधियों का संतुलन ही एक बेहतर भविष्य की शिक्षा का आधार बन सकता है।

संदर्भ (References)

1. शिक्षा तकनीकी- मिस्टर रोहित मंगलिक
2. कम्प्यूटर शिक्षा- डा. विनोद कुमार जैन
3. ए जनरल आफ रूरल डेवलपमेंट- कुरूक्षेत्र मासिक परीक्षा अगस्त 2024
4. तकनीकी एवं अशक्ता (बौद्विक अक्षमता)- मिस्टर रोहित मंगलिक
5. National Education Policy 2020
6. UNESCO Digital Education Reports
7. SWAYAM & DIKSHA Portal Data
8. Various Research Papers on E-learning
9. UGC & NCERT Guidelines on Digital Teaching

*Corresponding Author: Anshik Shukla

E-mail: r44158742@gmail.com
Received: 02 June,2025; Accepted: 27July 2025. Available online: 30 July, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License